अन्तर्राष्ट्रीय विरोध : प्रबन्धन एवं समाधान
(International Conflict : Management and Resolution)

प्रश्न : विरोध सिद्धान्त के प्रमुख तत्त्वों/विचारों का आलोचनात्मक परीक्षण करें।

Critically examine the main thrusts of the conflict theory.

उत्तर : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन में संलग्न विद्वानों के लिए विरोध-सिद्धान्त अथवा विरोध-विश्लेषण एक लोकप्रिय विषय रहा है। उनमें से कुछ तो अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को समुचित रूप में राष्ट्रों में विरोध-समाधान की प्रक्रिया के रूप में देखते हैं। ऐसे विद्वान् या तो राज्य के बाहरी वातावरण में कारगुज़ारी को उत्तम बनाने के लक्ष्य से प्रेरित रहे हैं या फिर अन्तर्राष्ट्रीय विरोध की प्रकृति को समझने के लिए शोध करते रहे हैं। वास्तव में विरोध विश्लेषण अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन में एक लोकप्रिय दृष्टिकोण रहा है और आज भी है। इस दृष्टिकोण के अधीन विरोध-सिद्धान्त निर्माण किए जाने के प्रयास होते रहे हैं, क्योंकि विद्वान् यह अनुभव करते रहे हैं कि ऐसा अध्ययन विरोध-समाधान की प्रक्रिया को निर्देशित तथा उत्साहित करने के लिए तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के वैज्ञानिक सिद्धान्त-निर्माण के उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यक है।

अन्तर्राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं, विशेषकर राष्ट्र-राज्यों में होने वाली सभी अन्तर्क्रियाएँ जिस वातावरण में होती हैं, उसमें सदैव विरोध विद्यमान् रहता है। विरोध ही वास्तव में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक प्रमुख कारक, एक बीज कारक तथा एक आवश्यक परिस्थिति रहा है। यह अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में सदैव विद्यमान् विशेषता रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में बहुत-से राष्ट्रीय-राज्यों की उपस्थिति तथा उनमें लगातार होने वाली अन्तर्क्रियाओं के परिणामस्वरूप विरोध स्वाभाविक और आवश्यक रूप में ही उत्पन्न हो जाता है। प्रत्येक राज्य के अपने हित, मूल्य, आवश्यकताएं तथा उद्देश्य होते हैं और वह सदैव इनमें तथा दूसरे राज्यों के हितों, मूल्यों, आवश्यकताओं और उद्देश्यों में विद्यमान् अन्तरों के प्रति चेतन होता है। विश्व समुदाय के सदस्य राष्ट्र-राज्य सदैव अलग-अलग हितों और उद्देश्यों की प्राप्ति करना चाहते हैं तथा वह इनमें विद्यमान् भिन्नताओं, विरोधों तथा अन्तरों के प्रति चेतना रखते हैं।

लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में जो हित और उद्देश्य विभिन्न राज्य प्राप्त करना चाहते हैं वह न तो पूर्ण रूप में एक-दूसरे के समरूप होते हैं और न ही पूर्ण रूप में विपरीत। इसी कारण अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में सहयोग और विरोध दोनों साथ-साथ पैदा होते हैं तथा सदा विद्यमान रहते हैं जबकि हितों और उद्देश्यों में विद्यमान् समरूपता, सहयोग तथा प्रतियोगिता को आधार प्रदान करती है, वहां असमरूपता अथवा विरोधता विरोध तथा उग्र-प्रतियोगिता को पैदा करती है।

विरोध उस समय स्वाभाविक रूप में उत्पन्न हो जाता है जब दो या अधिक राष्ट्र किसी एक वस्तु को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं या फिर किसी एक ही स्थिति पर पहुंचना चाहते हैं या एक ही जगह पर कब्जा करना चाहते हैं या विपरीत नीतियां अपना लेते हैं या विपरीत दिशाओं में भूमिकाएं निभाना आरम्भ कर देते हैं या विपरीत उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कार्य करना आरम्भ कर देते हैं या विपरीत उद्देश्यों को अपना कर अपने–अपने ढंग से उनकी प्राप्ति के लिए कार्य करना आरम्भ कर देते हैं या फिर एक समान उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विपरीत ढंगों को अपनाकर उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयत्न करना आरम्भ कर देते हैं। इन सभी तत्त्वों के कारण अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में विरोध एक निरन्तर विद्यमान रहने वाली वास्तविकता बन जाता है तथा राष्ट्र–राज्यों के व्यवहारों को प्रभावित करने वाली महत्त्वपूर्ण परिस्थिति पैदा हो जाती है।

विरोध की उपस्थिति के कारण, सभी राष्ट्र अधिक-से-अधिक लाभदायक स्थितियां प्राप्त करने की होड़ में लग जाते हैं। प्रत्येक अपनी राष्ट्रीय शक्ति का प्रयोग कर ऐसी स्थिति प्राप्त करने का प्रयास करता है तथा साथ ही साथ अपनी राष्ट्रीय शक्ति की वृद्धि के लिए भी प्रयास करने आरम्भ कर देता है, क्योंकि इसी साधन के द्वारा ही वह अपने राष्ट्रीय हितों के उद्देश्यों को प्राप्त कर सकता है। ऐसी परिस्थिति में राष्ट्रों के मध्य शक्ति के लिए संघर्ष उत्पन्न हो जाता है और प्रत्येक राष्ट्र अपनी राष्ट्रीय शक्ति का प्रयोग करने, उसको प्रकट करने तथा उसमें वृद्धि करने की प्रक्रिया में संलग्न हो जाता है। इस शक्ति–संघर्ष में प्रत्येक राष्ट्र यह प्रयास करता है कि उसे ऐसी अधिक-से-अधिक लाभकारी स्थिति प्राप्त हो जाए जिससे उसके लिए अपने राष्ट्रीय हित के लक्ष्यों को प्राप्त करना सरल, विश्वसनीय और प्रभावी हो जाए तथा विरोध–समाधान की प्रक्रिया में वह अपने वांछित परिणामों को प्राप्त करने के योग्य हो जाए।

प्रत्येक राष्ट्र के लिए विरोध का समाधान करना एक महत्त्वपूर्ण तथा आवश्यक कार्य होता है, क्योंकि असुलझा-विरोध सदैव गतिरोधों (Deadlocks) टकरावों, हिंसक कार्यवाहियों तथा युद्धों को पैदा करने का स्रोत होता है। ऐसी गतिविधियां/कार्यवाहियां सदैव राष्ट्र की हित–पूर्ति की क्षमता तथा राष्ट्रीय शक्ति को सीमित करती हैं। प्रत्येक राष्ट्र इस स्थिति से दूर रहना चाहता है। अतः वह विरोध-सुलझाव के लिए तत्पर रहता है।

साथ ही, जब विभिन्न राष्ट्र अपने–अपने राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति एवं सुरक्षा के लिए प्रयत्न करते हैं तो वह समान तथा समरूपी राष्ट्रीय हितों वाले देशों के साथ सहयोग एवं मेल–मिलाप करने के लिए आगे आते हैं। ऐसा करने से वह अपने विरोधियों–भाव ऐसे राष्ट्रों जो कि उनके विरोधी हितों की प्राप्ति करने का प्रयास कर रहे होते हैं, की तुलना में अपनी स्थिति को श्रेष्ठ बनाते हैं। इस प्रकार विरोध की विद्यमानता सहयोग का कारक भी बनती है। समरूप हितों वाले राष्ट्र अपने विरोधियों के विरुद्ध आपस में सहयोग करने की नीति अपनाते हैं ताकि वह संयुक्त रूप में ऐसे हितों की पूर्ति की योग्यता को बढ़ा ले तथा अन्तर्राष्ट्रीय विरोध-सुलझाव की प्रक्रिया में अपनी स्थिति को दृढ़ बना ले।

इस प्रकार राष्ट्रों के मध्य विरोध की उपस्थिति अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में सहयोग तथा विरोध दोनों को पैदा करती है। राष्ट्रों को आपसी सहयोग बढ़ाने तथा विरोध सुलझाव करने के लिए प्रेरित तथा विवश भी करती है।

इस रूप में किए गए विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को विरोध समाधान की प्रक्रिया के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है। विरोध अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक लगातार उपस्थित रहने वाला तत्त्व है। अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा की खोज में सदैव शान्तिपूर्ण साधनों से विरोध सुलझाव करने की प्रक्रिया विद्यमान रहती है। हम तो विरोध–रहित अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था की कल्पना भी वास्तव में नहीं कर सकते। विरोध की निरन्तर उपस्थिति झगड़ों, हिंसक गतिविधियों, युद्धों तथा विरोध–सुलझाव के प्रयासों को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में जन्म देती है। इसी के कारण राष्ट्रों में सदैव सर्वोच्चता, श्रेष्ठता तथा शक्ति के लिए संघर्ष की प्रक्रिया निरन्तर विद्यमान रहती है। इसी वास्तविकता के कारण राष्ट्र सदैव युद्ध के विरुद्ध शान्ति की स्थापना एवं सुरक्षा के लिए कार्य करने के लिए तत्पर रहते हैं। इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय विरोध के शान्तिपूर्ण समाधान के लिए लगातार प्रयास करते रहते हैं।

ऐसी परिस्थिति अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन में लगे विद्वानों को राष्ट्रों के मध्य विरोध तथा विरोध सुलझाव प्रक्रिया के अध्ययन के पक्ष में प्रभावित तथा विवश करती रही है। इसी कारण विरोध तथा विरोध सुलझाव के विषय अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन के प्रभुत्व तथा महत्त्वपूर्ण विषय बने हुए हैं।